यूजीसी केयर लिस्ट में शामिल
अप्रैल–जून 2021
वर्ष 11, अंक–22

मूल्य–100/-
ISSN NO. 2320-5733

समसामयिक सृजन

समकालीन साहित्य, शिक्षा एवं संस्कृति का संगम

भारतीय जनतंत्र में मीडिया और विज्ञापनों की भूमिका का एक अध्ययन — 278
डा. योगेन्द्र कुमार पाण्डेय

'तिरस्कृत' में हाशिये का समाज — 280
डॉ. ओम प्रकाश सैनी

जयनंदन की रचनाओं में मजदूर — 283
डॉ. गोपाल प्रसाद

लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका — 285
डॉ. सुनील कुमार

समकालीन हिंदी उपन्यासों में चित्रित साम्प्रदायिकता: ग्रामीण परिवेश के संदर्भ में — 288
शेख उस्मान सत्तारमियाँ

नई राष्ट्रीय शिक्षण नीति में संगीत शिक्षा और संभावनाएं — 291
डॉ. सुरेन्द्र कुमार

हिन्दी साहित्य के दैदीप्यमान सूर्य : रामधारी सिंह 'दिनकर' — 294
डॉ. सुरेन्द्र शर्मा

स्त्री पराधीनता की अंतहीन दासतां-राम रहीम — 297
डॉ. रमेश यादव

भारत में महिला उद्यमिता व चुनौतियां — 299
डा. सुनीता

सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन — 302
आशुतोष कुमार दूबे / डॉ. (श्रीमती) मधुबाला राय

प्रधानमंत्री जन-धन योजना और उत्तर प्रदेश में वित्तीय समावेशन की चुनौतियों का अध्ययन — 305
डॉ. जय शंकर शुक्ल

ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा के अभाव के कारण — 309
डॉ. दिनेश प्रसाद मिश्र

विकलांग-विमर्श : दशा और दिशा का मनोवैज्ञानिक अवलोकन (पुस्तक समीक्षा) — 311
डॉ सीमा रानी / डॉ मीना पाण्डेय

स्वंय प्रकाश के कथा साहित्य में मार्क्सवाद का प्रभाव — 316
स्मिता भारती

हिन्दी काव्य में राष्ट्रीयता और माखनलाल चतुर्वेदी — 318
डॉ. संजय कुमार मिश्र

हिन्दी शिक्षण का वैश्विक परिदृश्य — 320
अजय कुमार

राजनीति, राजनेता और नागार्जुन — 322
अमृता रानी

बाल कहानियों की प्रासंगिकता — 324
डॉ. अंजु रानी

'एलिस एक्का की कहानियाँ और आदिवासी स्त्री' — 326
मो. आजम शेख

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में आंचलिकत्ता — 328
चन्द्रकला मीना / डॉ. प्रदीप कुमार मीना

'ढिबरी टाइट' कहानी संग्रह का समीक्षात्मक अध्ययन — 331
दीन दयाल सैनी

भारत में राष्ट्रीय एकीकरण एवं आन्तरिक सुरक्षा संबंधी चुनौतियाँ — 332
डॉ. दीपक कुमार अवस्थी / डॉ. मृदुला शर्मा

प्रेमचन्द की कथा दृष्टि शिवप्रसाद सिंह — 337
डॉ. अजीत सिंह

साहित्य और पर्यावरण के परिप्रेक्ष्य में 'बांझ घाटी' — 339
डॉ. अमित सिंह

'राष्ट्रीय आंदोलन में हिंदी फिल्मों की भूमिका' — 341
डॉ. ममता

विश्व राजनीति में पर्यावरण संबंधी चिंताएं एवं समाधान — 344
डॉ. मनीष

नई शिक्षा नीति की अवधारणा और चुनौतियाँ — 347
डॉ. नंदन कुमार भारती

कल्पना पत्रिका में विदेशी साहित्य — 350
डॉ. निकिता जैन

अज्ञेय के कथा साहित्य में चित्रित पात्रों का कथा में महत्त्व- — 353
डॉ. रानी बाला गौड / गरिमा वर्मा

पाकिस्तान की माँग और भारत विभाजन का एक ऐतिहासिक अवलोकन — 355
डॉ. माया कीर्ति

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का समग्र आलोचनात्मक अवलोकन — 357
जाहन्वी देव

शिक्षातंत्र का बदलता स्वरूप; वैदिक शिक्षा प्रणाली से आरटीई की ओर — 359
कनक प्रिया

निबलेट की डायरी:अंग्रेजी प्रशासक की दृष्टि में भारत छोड़ो आन्दोलन — 362
डॉ. कुलभूषण मौर्य

देशज आधुनिकता बोध के कवि त्रिलोचन — 365
माधवम सिह

'देहान्तर' नाटक की मूल संवेदना — 368
ममता यादव

अस्तित्व को तलाशती शिवमूर्ति की कहानी 'कुच्ची का कानून' — 370
मनीष कुमार

मेहरून्निसा परवेज की कहानियों में नारी अस्मिता की खोज — 372
नगीना मेहरा

आदिवासी साहित्य में राजनैतिक चेतना के स्वर — 374
निर्मला मीना / डॉ. अशोक कुमार मीना

नारी का अन्त: संघर्ष और महादेवी वर्मा — 376
पूनम शर्मा / डॉ. अरूण बाला

बिहार के विकास में महिलाओं की भूमिका को सशक्त बनाने के विभिन्न आयाम का एक अध्ययन — 378
प्रो. (डॉ.) महबूब आलम

इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता के काव्य-प्रतिमान — 381
प्रो. रसाल सिंह / प्रभाकर कुमार

भारत में न्यायिक सक्रियता एवं जनहितवाद के वर्तमान स्वरूप की विवेचना — 384
डॉ. राजेश कुमार शर्मा / डॉ. संगीता शर्मा

'तिरस्कृत' में हाशिये का समाज

डॉ. ओम प्रकाश सैनी

दलित साहित्यकारों में दलित चिंतक सूरजपाल चौहान की आत्मकथा 'तिरस्कृत' सर्वाधिक चर्चित और विवादास्पद है। 'तिरस्कृत' में दलित साहित्य की स्वतंत्रत सत्ता, सौंदर्य बोध, पाठकीय चेतना–संवेदना आदि सवालों को महत्वपूर्ण ढंग से उठाया गया है। वास्तव में यह दलित मुक्ति का ज्वलंत दस्तावेज है। हिंदी साहित्य में उपेक्षित हाशिये का समाज स्त्री, दलित, आदिवासी, किसान, किन्नर आदि को लेकर चर्चाओं का दौर जारी है। अस्मितामूलक विमर्शों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण दलित विमर्श को लेकर साहित्यिक जगत में एक नई बहस ने जन्म लिया है, यह साहित्य क्या है? कैसा है? सकारात्मक है अथवा नकारात्मक? ग्राह्य है अथवा अग्राह्य? ये ऐसे ज्वलंत प्रश्न हैं जो बौद्धिकों को आंदोलित करते हैं। यह निश्चित है कि दलित साहित्य पूर्णतया: नकार का साहित्य नही है। यह साहित्य समाज के लिए उपयोगी था, उपयोगी है, उपयोगी रहेगा बशर्ते हम दलितों के प्रति अपने पूर्वाग्रहों से मुक्त हों। दलित साहित्य पर छिड़ी ये बहस निश्चित रूप से उपादेय है, क्योंकि साहित्य का नित्य धर्म स्वस्थ चिंतन ही है। इस बहस को केंद्रीय विमर्श की परिधि में लाने का श्रेय भी दलित साहित्यकारों को ही दिया जाना चाहिए। आज दलित लेखक जीवन के बहुआयामी पक्षों को लेकर लिख रहा है यह संतोष का विषय है। हिंदी साहित्य मे भगवान दास द्वारा लिखित 'मैं भंगी हूँ' अछूत जाति की पहली आत्मकथा से शुरू हुआ आत्मकथा लेखन का यह सिलसिला निरंतर जारी है। यह इस बात का प्रमाण है कि आज दलित लेखक अपने अनुभव कौशल के आधार पर केवल अपने जीवन के कटु सत्यों को ही उजागर नही कर रहा है बल्कि सफलतापूर्वक समस्त दलित समाज की जीवनचर्या को रेखांकित कर रहा है। दलित आत्मकथा लेखन की दृष्टि से सूरजपाल चौहान की आत्मकथा 'तिरस्कृत' अनूठी बन पड़ी है। सूरजपाल चौहान द्वारा लिखित आत्मकथा 'तिरस्कृत' दलित समाज के उत्पीड़न शोषण की व्यथा–कथा है। दलित जन्म से ही नैतिक दबाव और मुक्ति के लिए संघर्ष करता आया है। आत्मकथाकार सूरजपाल चौहान ने ब्राह्मणवादी समाज से बहिष्कृत होकर ही 'तिरस्कृत' लिखा है, जिसे साहित्यिक समाज ने हाथों–हाथ लिया है। लेखक ने बचपन से लेकर युवावस्था तक जिन दारूण कष्टों, स्थितियों को भोगा है, यह सिलसिला थमने का नाम नही ले रहा है। हमारे गांव–देहात में दलित आज भी नारकीय जीवन भोगने को विवश हैं। आज भी सेठ–साहूकारों अथवा वर्चस्ववादी समाज के इशारों पर नाचना इनकी नियति है, थोड़ी सी भी हील–हुज्जत करने पर इनका हुक्का–पानी बंद यानी सामाजिक बहिष्कार कर दिया जाता है या फिर इन्हे गांव छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ता है। 'तिरस्कृत' वरिष्ठ दलित चिंतक सूरजपाल चौहान के अभिशप्त संघर्षमय जीवन का ही सफरनामा नहीं है बल्कि संपूर्ण दलित समाज के वीभत्स जीवन का लेखा है। बाबा साहेब की प्रेरणा से शिक्षित होकर लेखक न केवल अपने जीवन के घोर अंधियारे को पाटने का साहस जुटाता है अपितु समाज में फैली कुरीतियों का उच्छेदन कर समाज को सही राह दिखाने को कृतसंकल्प है। भारतीय समाज विशेषत: दलित समाज सदियों से सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक विषमताओं की पीड़ा झेलने को विवश है। समाज में फैली जातीय विषमता ऊँच–नीच, छुआछूत ने समाज को पतन के गर्त में धकेला है। एक शिक्षित, स्वाभिमानी, जागरूक एवं संवेदनशील व्यक्ति होने के नाते लेखक ने समाज में प्रचलित मिथ्या धारणाओं को तोड़ने का बीड़ा उठाया है। ये ऐसी बेड़ियां है जो इक्कीसवीं सदी के शिक्षित, सुसभ्य समाज की तरक्की में बाधा है, सामाजिक ताने–बाने के लिए घातक हैं, जिन्हें तोड़ने के लिए लेखक उतावला है, जिनके लिए विद्रोही तेवर अपनाने में उसे तनिक भी संदेह नही। निरूसंदेह यह तीखे तेवर उन्हें दलित विमर्शकारों की कोटि में अग्रणी बनाते हैं। डॉ. श्याम निर्मम 'तिरस्कृत' आत्मकथा के महत्व को दर्शाते हुए लिखते हैं "इसमें दलित वर्ग और समाज के दुख दर्द, संस्कार गत रूढ़ियां, सांप्रदायिक उन्माद, शोषित वंचित समाज की करुण गाथा अंतर्निहित है और ऐसे अनेक वंचित प्रसंग भी सामने आए हैं जो समाज की जकडन घेराबंदी को तोडने की दिशा में सीधे–सीधे प्रहार करते हैं और मानसिकता बदलने का ऐलान भी।"[1] भारतीय समाज में सबसे नीचे पायदान पर यदि कोई है, तो वह दलित समाज है क्योंकि हम ऐसी परिस्थितियों को भोगने के आदी हो गए हैं। हम शिक्षित होना, अपने अधिकारों के लिए लड़ना ही नही जानते। समाज में अपनी बदतर, दीन–हीन परिस्थितियों के लिए हम स्वयं जिम्मेवार है। सूरजपाल चौहान ने अपनी आत्मकथा 'तिरस्कृत' के जरिए दलित समाज के दुख–दर्द एवं पीडाओं का सजीव उद्घाटन किया है। दलित, पीड़ित, शोषित, वंचित समाज के शोषण का जैसा सजीव चित्रण उन्होंने किया है, अन्यत्र दुर्लभ है। वस्तुत: महाजनी सभ्यता ने दलितों को पैरों की जूती के सिवा कुछ समझा ही नहीं। सवर्ण समाज की घृणास्पद नजरों में अछूत, दलित, अन्त्यज समाज केवल दास और सेवक ही हो सकता है। वह उच्च पदों के काबिल नहीं है। देश और समाज के उत्थान मे उसकी भूमिका नगण्य है। नयी पीढी के सामने ये ऐसे सवाल हैं जिनका प्रत्युत्तर केवल शिक्षित–संगठित होकर ही दिया जा सकता है। डॉ. वीर तलवार ने आत्मकथा 'तिरस्कृत' की महत्ता बतलाते हुए लिखा है "सूरजपाल चौहान की आत्मकथा तिरस्कृत साहित्यिक दृष्टि से जितनी महत्वपूर्ण है, समाजशास्त्रीय दृष्टि से भी उतनी ही मूल्यवान है।"[2] नि:संदेह 'तिरस्कृत' सामाजिक न्यायिक चेतना का मार्मिक दस्तावेज है। यह हमारी अन्तश्चेतना को झकझोरती है।